The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन

मुकेश

शोधार्थी: बयालसी पी जी कॉलेज, जलालपुर, जौनपुर, संबद्ध: वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्व विद्यालय,जौनपुर

डॉ बृजेश मिश्र

सह प्राध्यापक शिक्षा विभाग, बयालसी पी जी कॉलेज जलालपुर जौनपुर

डॉ अरविन्द कुमार

सहायक प्राध्यापक शिक्षक शिक्षा संकाय, लाल बहादुर शास्त्री पी जी कॉलेज, मुगल सराय, चंदौली उत्तर प्रदेश

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18919420

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

नई शिक्षा नीति 2020, अध्यापक मूल्य, प्राथमिक विद्यालय,अध्यापक।

ABSTRACT

करुणानैतिकता आदि जैसे मानवीय ,लोगों की प्रति प्रेम ,सहानुभूति , मूल्यों को विकसित करना शिक्षा का एकमात्र ध्येय होना चाहिए जिससे 2020 छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। नई शिक्षा नीति, भारतीय शिक्षा प्रणाली को और भी अधिक समावेशीमूल्य आधारित तथा , में 2020 गुणवत्तापूर्ण बनाने का प्रमुख प्रयास है। नई शिक्षा नीति शिक्षक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण घटक माना गया है। प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण एवं चरित्र निर्माण में भूमिका एक नींव के रूप में होती है। प्रस्तुत शोध पत्र एक अवधारणात्मक अध्ययन है जिसका उद्देश्य नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के प्रमुख मूल्यों का सैद्धांतिक रूप से विश्लेषण करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अध्यापकों में नैतिकधार्मिक एवं ,सौंदर्यात्मक ,मानवीय ,सामाजिक , नवाचार संबंधी मूल्य से परिपूर्ण होना अति आवश्यक है।

प्रस्तावना

21वीं सदी में प्रवेश के साथ मनुष्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में अनेक सफलताएं प्राप्त की किंतु इसके साथ- साथ मनुष्य के भावनात्मक एवं वैचारिक जगत में अत्यंत हानि हुई। हमारी आस्था,संवेदना एवं मानवीय मूल्य अत्यंत प्रभावित हुए हैं। इन्हीं परिवर्तनों के चलते 1986 के शिक्षा नीति के बाद हमारे देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू हो चुकी है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सभी के लिए समावेशी एवं समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने को लक्षित किया गया है क्योंकि हम सभी जानते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आधार ही मूल्य है।वर्तमान समय में हम अपने देश और समाज का उचित रूप से मूल्यांकन करें तो हम पाएंगे कि सबका एकमात्र लक्ष्य प्रतियोगिता में जितना बन चुका है। यही प्रतियोगिता विद्यालय के में अंक प्राप्त करने से प्रारंभ होकर रोजगार के धन पर समाप्त हो रही है। शिक्षा जितनी रोजगारोंन्मुखी होती गई, उतनी ही जीवन मूल्यों से दूर होती जा रही है, मनुष्यों में सिर्फ कमाने की होड़ सी लगी है जो परिवार,समाज, राष्ट्र व प्रकृति से पारस्परिक रूप से दूर होता जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मूल्यों को अलग से सीखने की बात नहीं करता बल्कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ सीखने की बात करता है। वर्तमान शिक्षा नीति(2020) में शामिल मूल्य जैसे शारीरिक मूल्य, संज्ञानात्मक मूल्य, भावात्मक मूल्य,नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य आदि ये सभी मूल्य भारतीय संस्कृति में परंपरागत रूप से सम्मिलित हैं। जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए आने वाले आवश्यकता को पूरा करना हैइस नीति में भारत की परंपरा तथा उसके सांस्कृतिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्य रखा गया है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से ना केवल साक्षरता,उच्च तार्किकता एवं समस्या समाधान संबंधित संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास हो बल्कि उसके साथ-साथ नैतिक सामाजिकता तथा भावनात्मकता स्तर का भी विकास होना चाहिए।

इसलिए मूल्य शिक्षा की आज जितनी आवश्यकता की अनुभूत की जा रही शायद उतनी कभी नहीं तभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है ।

नई शिक्षा नीति 2020 में अध्यापक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षण को सार्वजनिक सेवा के रूप में स्वीकार किया है। इस नीति के अनुसार शिक्षक को छात्रों में एक निश्चित मानवीय आचरण की योग्यता विकसित करनी चाहिए क्योंकि अध्यापक ही शिक्षा की गुणवत्ता का प्रमुख निर्धारक होता है। अभिभावक के बाद शिक्षक ही छात्रों को

आदर्श रूप देते हैं, जिन्हें छात्र अपने जीवन व्यवहार व आदतों में शामिल करते हैं। विकास के विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए शिक्षकों के दृष्टिकोण व मूल्य छात्रों के साथ एकीकृत होने लगते हैं इसलिए शिक्षको के लिए यह जरूरी होता है कि उनके अपने व्यक्तित्व में शिक्षा संस्कार का समावेश हो। इस नीति ने शिक्षकों को तैयार करने के लिए बहुविषयक दृष्टिकोण व ज्ञान के साथ मूल्य के निर्माण भी अत्यंत आवश्यक माना है। शिक्षक शिक्षा में विश्वसनीयता,निष्ठा,प्रतिबद्धता, मानवता,दयालुता, समानता, नैतिक आचरण व मानवीय मूल्य जैसे गुणों के विकास पर बल दिया जाना जरूरी है। यदि हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आकांक्षाओं को प्राप्त करना चाहते हैं तो शिक्षक शिक्षा की जड़ों को सबसे पहले भारतीय मानवीय मूल्यों से सींचना होगा। जिससे की छात्रों में ज्ञान कौशल के साथ साथ मूल्यवान व सदाचार की भावना से भी परिपूर्ण किया जा सके।

नई शिक्षा नीति 2020 और अध्यापक मूल्य

अध्यापकों के मूल्य,आदर्श एवं मानदंडों से परिपूर्ण होते हैं जो अनेक प्रकार व्यवहार, निर्णय और शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 की संरचना में अध्यापक को ऐसे मार्गदर्शक के रूप में रखा गया है जो छात्रों का आदर्श एवं प्रेरक हो सके। नई शिक्षा नीति 2020 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है की अध्यापक इन प्रमुख मूल्यों के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है,प्रमुख मूल्य निम्नलिखित प्रकार से हैं-

1.नैतिक मूल्य- नैतिक मूल्य वे मूल्य होते हैं जिसमें सत्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं निष्पक्षता आदि जैसे मूल्यों का संग्रह होता है।

2.सामाजिक मूल्य- ऐसे मूल्य होते हैं जिसमें समानता,सहयोग एवं सम्मान आदि जैसे प्रमुख मूल परिलक्षित होते हैं।

3.व्यावसायिक मूल्य- कर्तव्यनिष्ठा, जिम्मेदारी और समर्पण आदि जैसे प्रमुख मूल्यों को व्यवसायिक मूल्य कहते हैं ।

4.मानवीय मूल्य- ऐसे मूल्य जो सहानुभूति, संवेदनशीलता एवं प्रेम आदि का प्रतीक हो उसे मानवीय मूल्य कहते हैं।

5.नवाचार मूल्य- नई शिक्षण विधियां और तकनीक के उपयोग, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो।

प्राथमिक स्तर पर अध्यापक मूल्यों का महत्व

प्राथमिक स्तर शिक्षा की नींव है, इस स्तर से बालकों के व्यक्तित्व, व्यवहार एवं मूल्यों का निर्माण प्रारंभ होता है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा में अध्यापक का व्यक्तित्व, व्यवहार और उसके मूल्य बच्चों के संपूर्ण विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं क्योंकि बालक इस अवस्था में अध्यापक का अनुकरण करता है और उन्हें आदर्श रूप में देखा है। नई शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक शिक्षा को मूल्यपरक शिक्षा बनाने पर अत्यधिक बल दिया गया जिससे अध्यापक का कार्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं बल्कि बच्चों में नैतिकता, सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का भी विकास करना है। अतः स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर पर अध्यापक के मूल्य बच्चों के चरित्र निर्माण, सामाजिक विकास, व्यक्तिगत विकास एवं शैक्षिक उन्नति के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

सैद्धांतिक विश्लेषण- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य संज्ञानात्मक, सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक आदि मूल्यों के विकास के माध्यम से छात्रों का समग्र विकास करना है। उपयुक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। सैद्धांतिक रूप से अध्यापक के मूल्य अनेक शिक्षा दार्शनिक सिद्धांतों जैसे आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रगतिवाद आदि पर आधारित होते हैं जो अध्यापक के नैतिक, सामाजिक, व्यवसायिक, मानवीय मूल्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता आदि के रूप में छात्रों के सार्वभौमिक विकास को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान नीति में शिक्षक शिक्षा को नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया गया है जिससे छात्रों में चिंतन, समस्या समाधान और रचनात्मक क्षमता का विकास हो सके।

शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों, शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन के लिए विशेष शैक्षिक सुझाव प्रस्तुत करता है इस अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि यदि अध्यापकों में मूल्यों का विकास करना है तो इसकी शुरुआत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मूल्य शिक्षा का समावेशन से की जानी चाहिए। भावी अध्यापकों को इस प्रकार शिक्षण प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि वे सभी बच्चों के साथ समान एवं निष्पक्ष व्यवहार करें तथा सबकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सम्मान करें। शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन के स्तर पर यह आवश्यक है कि अध्यापकों के कर्तव्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व एवं नवाचार जैसे व्यवसायिक मूल्यों के विकास के लिए संस्थान की तरफ से नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठी का आयोजन होना चाहिए तथा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए जिससे वे नीति के अनुरूप शिक्षण कार्य कर सकें।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत अवधारणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है की नई शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के मूल्यों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस नीति में शिक्षक को शिक्षा प्रणाली का केंद्रीय घटक माना गया है। जो छात्रों के संवेगात्मक, नैतिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास में प्रमुख भूमिका प्रदान करते हैं ।

अध्ययन यह भी इंगित करता है कि प्राथमिक स्तर पर अध्यापक के सभी नैतिक मूल्य जैसे सत्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं निष्पक्षता आदि छात्रों के उचित चरित्र निर्माण में बेहद सहायक सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार से व्यावसायिक मूल्य जैसे कर्तव्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व एवं समर्पण आदि शिक्षण प्रक्रिया को और भी प्रभावी बनाती हैं जिसके समायोजन से सकारात्मक व्यवहार का विकास होता है ।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के लिए प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में नैतिक, सामाजिक, व्यवसायिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सकारात्मक प्रभाव डालता है बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण व राष्ट्र के समग्र विकास में भूमिका प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

- 1.सिंह, सौरभ (2021) मूल्य एवं शान्ति शिक्षा, अग्रवाल ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन आगरा ।
- 2 . तिवारी, कविता (2022) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आकांक्षाओं की पूर्ति के सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा, एंथोलोजी द रिसर्च , **vol -vii.**
- **https://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=1227**
- 3 . राष्ट्रिय शिक्षा नीति (2020) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- **4 . www.ijarsct.co.in**
- **5 .http:www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/**
- 6 . राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (2022) शिक्षक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा. राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली।
- 7 .यूनेस्को (2024) शिक्षक कल्याण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा. **Unesco publishing,** पेरिस।
- 8.यूनेस्को (2024) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु शिक्षक नेतृत्व की पूर्नकल्पना. **UNESCO Publishing,** पेरिस।

- 9.मिश्रा, अरविंद कुमार (2025) विशिष्ट बीटीसी शिक्षकों के शैक्षिक सामाजिक स्थिति एवं जीवन मूल्य पर प्रभाव का एक अध्ययन (शिक्षा शास्त्र में पी एचडी हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध,वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय)
- **http://hdl.handle.net/10603/630945**
- 10.रवि, केश कुमार (2024) अनुदानित एवं गैर अनुदानित महाविद्यालय में बी एड परीक्षार्थियों के आधुनिकता का उनके शिक्षण अभिवृत्ति एवं जीवन मूल्य पर पढ़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन(शिक्षा शास्त्र में पी एचडी हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय)
- **http://hdl.handle.net/10603/606983**